दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 09.05.2025

प्रकाशनार्थ

देशभक्ति एवं पुरुषार्थ के वास्तविक प्रतीक हैं वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप :प्रो सत्यपाल सिंह

दिनांक 09.05.2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर के बी.एड. विभाग में 'हिंदुआ सूर्य' वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 485वीं जयंती का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रो.(डॉ.) सत्यपाल सिंह, अर्थशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने माँ सरस्वती एवं महाराणा प्रताप के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि कर किया। उसके पश्चात विभाग के सभी प्राध्यापकगण एवं द्वितीय तथा चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षुओं ने महाराणा प्रताप जी के चित्र पर पुष्पांजलि कर उनका नमन किया।

मुख्य अतिथि प्रो.(डॉ.) सत्यपाल सिंह ने महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वदेश, स्वाभिमान और स्वधर्म के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने वाले महाराणा प्रताप जी के जीवन से हमें पता चलता है कि हमारे अन्दर पुरुषार्थ का जागरण आपातकाल में होता है। उनके व्यक्तित्व की आभा, सदियों तक 'मानवता के संघर्ष' को प्रकाशमान करती रहेगी। उन्होंने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास और वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने हमारे सनातन धर्म और संस्कृति को जोड़ के रखा। आपने समसामयिक घटनाचक्रों का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत देश में धर्म की जगह राष्ट्र को शीर्ष पर रखा जाता है, इसीलिए हम सम्पूर्ण देश में सौहार्द बनाये रखते हुए एक राष्ट्र के रूप में दुश्मन देशों पर विजय प्राप्त कर पाते हैं। चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षु योगेश ने महाराणा प्रताप पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप के संघर्ष में हकीम शाह सूरी और भामाशाह ने उनका सहयोग किया था, जिससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि राष्ट्र की रक्षा में सभी समुदाय के लोगों का योगदान रहा है।

द्वितीय सेमेस्टर की प्रशिक्षु सन्नू गौतम ने महाराणा प्रताप की जीवनी का संक्षिप्त परिचय दिया। चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षु बिंदेश्वर तिवारी ने महाराणा प्रताप के बलिदान को याद किया। प्रशिक्षु हर्षिता कश्यप ने महाराणा प्रताप पर सुप्रसिद्ध कविता "रण बीच चौकड़ी भर–भर कर चेतक बन गया निराला था" प्रस्तुत किया। प्रशिक्षु नितेश शर्मा ने कविता 'युद्ध नहीं जिनके जीवन में' प्रस्तुत किया। प्रशिक्षु प्रद्युम्न दुबे ने कहा कि महाराणा प्रताप जी ने मुगलों की पराधीनता कभी स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने अकबर के प्रलोभनों को ठुकराकर उसका पुरजोर विरोध किया था।

कार्यक्रम का आभार ज्ञापन प्रशिक्षु अंशिका पांडे ने एवं संचालन प्रद्युम्न दुबे ने किया। इस अवसर पर विभाग की प्रभारी प्रो.(डॉ.) शुभ्रा श्रीवास्तव, प्रो.(डॉ.) अरुण कुमार तिवारी, डॉ. सुभाष चन्द्र, श्री राकेश कुमार सिंह, श्री प्रदीप कुमार यादव, श्रीमती शालिनी पारिक, एवं बी.एड. के समस्त प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

(डॉ.) शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क